1

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

स नो वसून्याभर। **अथर्ववेद 6/63/4**

वह परमेश्वर हमें धन धान्य प्राप्त कराए।

O Lord ! Bestow upon us wealth & Prosperity.

वर्ष 38, अंक 34 **एक प्रति : 5 रुपये**
सोमवार 6 जुलाई, 2015 से रविवार 12 जुलाई, 2015
विक्रमी सम्वत् 2072 सृष्टि सम्वत् 1960853116
दयानन्दाब्दः 192 वार्षिक शुल्कः 250 रुपये **पृष्ठ 8**
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें- www.thearyasamaj.org/aryasandesh

'महर्षि दयानन्द द्वारा आद्य राजर्षि मनु के कुछ हितकारी उपदेशों का सत्यार्थ प्रकाश में प्रस्तुतिकरण'

महर्षि दयानन्द जी द्वारा सत्यार्थ प्रकाश में मनुस्मृति के श्लोको का जो हिन्दी अनुवाद वा पाठ प्रस्तुत किया गया है, ऐसे कुछ स्थलों को पाठकों के स्वाध्याय लाभ हेतु प्रस्तुत कर रहे हैं। ***-संपादक***

वेद सर्वप्राचीन ग्रन्थ हैं। वेदों के बाद अत्यन्त प्राचीन ग्रन्थों में मनुस्मृति का नाम आता है। सौभाग्य से वैदिक साहित्य के शत्रु जिन्होंने हमारे तक्षशिला एवं नालन्दा व अन्य पुस्तकालयें को अग्नि को समर्पित कर नष्ट किया, इन्हें नष्ट नहीं कर पाये। ईश्वर की यह महती कृपा आर्य जाति के प्रति दिखाई देती है। इसके लिए हमारे वह पूर्वज महापुरूष हमारी श्रद्धा व आभार के पात्र हैं जिन्होंने दुर्दिनों में इनकी रक्षा कर हम तक पहुंचाया है। मध्यकाल में हमारे पौराणिक विचार के पूर्वजों ने मनुस्मुति से अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए इसमें अनेक प्रक्षेप किये जिससे इसका स्वरूप वह नहीं रहा जो महर्षि मनु, उनके बाद महाभारत काल पर्यन्त व बाद के कुछ वर्षो तक था। महाभारत काल के बाद यह प्रक्षेप व परिवर्तन किये गये। ईश्वर की कृपा ही कह सकते हैं कि प्रक्षेपकर्त्ताओं ने मनुस्मृति से श्लोकों को निकाला नहीं परन्तु अपनी अपनी मान्यताओं के श्लोक बनाकर ही बीच- बीच में उसमें डाल दिये जिससे लोग उन प्रक्षिप्त श्लोकों पर भी विश्वास करने लगे। महाभारत काल के बाद भारत में मुद्रण व्यवस्था विद्यमान न होने के कारण सभी ग्रन्थ भोजपत्रों आदि पर हाथ से लिखे जाते थे। बहुत सीमित प्रतियां किसी ग्रन्थ की होती थीं। अत: एक प्रति में प्रक्षेप हो जाने पर उसकी जो प्रतियां अर्थात् प्रतिकृतियां किसी विद्वान व उसके शिष्यों द्वारा होती थीं उसमें वह प्रक्षेप हुआ करते थे। **लिपिकर्त्ता भी अपनी मनमानी करते रहे होंगे, इसका अनुमान इसी बात से लगता है कि महर्षि दयानन्द जी ने अपना प्रथम मुख्य ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश पं. चन्द्रशेखर को बोलकर लिखाया था। इस लेखक ने महर्षि दयानन्द जी की जो बातें उसके विचारों व मान्यताओं के विपरीत थीं उन्हें चुपचाप बदल दिया जिसका ज्ञान महर्षि दयानन्द को तब हुआ जब वह ग्रन्थ छप कर पाठकों के पास पहुंच गया। प्रेसकर्मी भी सत्यार्थप्रकाश के बदलने के दोषी रहे हैं। वह भी कम्पोज करते समय जहां उन्होंने जो ठीक लगा, स्वेच्छाचारितापूर्वक गुपचुप परिवर्तन कर डाला। बाद में महर्षि दयानन्द को इसके लिए विज्ञापन प्रकाशित कर प्रचारित करने पड़े और सत्यार्थप्रकाश का नया पुनरीक्षित व संशोधित संस्करण प्रकाशित करना पड़ा। यदि किसी कारण ग्रन्थ लिखने व प्रकाशित होने के साथ उनकी मृत्यु हो जाती तो अनर्थ हो जाता। लोग प्रक्षेपों को ही मूल पाठ समझने लगते। ऐसा ही मनु जी के ग्रन्थ मनुस्मृति में भी मध्यकाल में स्वार्थी पण्डित विद्वानों ने किया।** महर्षि दयानन्द ने अपनी अनुसंधान व सत्य के ग्रहण की मनोवृत्ति से मनुजी के प्रत्येक शब्द व श्लोक की परीक्षा की और केवल सत्य पाठों व श्लोकों को ही स्वीकार किया। आज के इस लेख में महर्षि दयानन्द जी द्वारा सत्यार्थ प्रकाश में मनुस्मृति के श्लोको का जो हिन्दी अनुवाद वा पाठ प्रस्तुत किया गया है, ऐसे कुछ स्थलों को पाठकों के स्वाध्याय लाभ हेतु प्रस्तुत कर रहे हैं।

महर्षि लिखते हैं कि **धर्मयुक्त कामों का आचरण, सुशीलता, सत्पुरूषों का संग और सद्विद्या के ग्रहण में रूचि आदि आचार और इन से विपरीत अनाचार कहाता है।** उसका उल्लेख वह मनुस्मृति के श्लोकों का अनुवाद कर प्रस्तुत कर रहे हैं। पाठक महर्षि दयानन्द के शब्दों पर कृपया ध्यान दें। आज से 141 वर्ष पूर्व अज्ञान में डूबे भारत के लोगों को कितनी महत्त्वपूर्ण बातें वह बता रहे हैं। यदि यह ज्ञान महाभारत काल के बाद रहा होता तो संसार में केवल एक वैदिक मत ही विद्यमान

...शेष पेज 6 पर

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के प्रकरण में अत्यावश्क बैठक

*गुरुकुल कांगड़ी विश्व*विद्यालय हरिद्वार के वर्तमान में चल रहे प्रकरण के संबंध में समस्त जानकारियां प्रदान करने के लिए तीनों आर्यो प्रतिनिधि सभाओं के अधिकारियों की **अत्यावश्क बैठक रविवार 12 जुलाई 2015 को प्रात: 11 बजे आर्य समाज, हनुमान रोड, नई दिल्ली के सभागार** में आयोजित की गई हैं। समस्त संबंधित पदाधिकारियों एवं सदस्यों से निवेदन है कि समय पर पहुंचकर सहयोग प्रदान करें। इस बैठक में जन साधारण भी गुरुकुल के वर्तमान प्रकरण संबंध में अपने प्रश्न पूछने एवं जानकारी प्राप्त करने के लिए सादर आमंत्रित हैं।

-महामंत्री

महाराष्ट्र सरकार द्वारा मदरसो की विद्यालयी मान्यता समाप्त करने पर बहस

गुरुकुल और मदरसा - क्या तुलना करना सही है?

महाराष्ट्र की फड़नवीस सरकार ने अठारह हजार मदरसों को एक मजहबी शिक्षा का स्रोत मानते हुए स्कूलों की श्रेणी से बाहर करने का फैसला लिया है। यह फैसला भले ही इस्लाम के स्वयं घोषित धर्मगुरुओं में बैचेनी पैदा करे किन्तु उनमें पढ़ रहे मासूम बच्चों को राहत प्रदान करने वाली है कि अरबी, फारसी मजहबी शिक्षा प्रणाली से निकलकर अब वे बच्चे शिक्षा की मुख्यधारा से जुड़ सकेंगे। लेकिन देश की मीडिया इस खबर को राष्ट्रीय मुद्दा बनाकर मदरसों की तुलना भारत की अतिप्राचीन शिक्षा प्रणाली से कर रही है, क्या यह उचित है? ***-सम्पादक***

कई रोज पहले महाराष्ट्र की फड़नवीस सरकार ने अठारह हजार मदरसों को एक मजहबी शिक्षा का स्रोत मानते हुए स्कूलों की श्रेणी से बाहर करने का फैसला लिया। यह फैसला भले ही इस्लाम के स्वयं घोषित धर्मगुरुओं में बैचेनी पैदा करे किन्तु उनमें पढ़ रहे मासूम बच्चों को राहत प्रदान करने वाली है कि अरबी, फारसी मजहबी शिक्षा प्रणाली से निकलकर अब वे बच्चे शिक्षा की मुख्यधारा से जुड सकेंगे। लेकिन जिस तरीके से देश की मीडिया इस खबर को राष्ट्रीय मुद्दा बनाकर मदरसों की तुलना भारत की अतिप्राचीन शिक्षा प्रणाली आदर्श शिक्षा के एक मजबूत स्तम्भ गुरुकुल से कर रही है जिसने समस्त मानव जाति को समय-समय पर संस्कारित करने के साथ चरित्र, विविध कर्त्तव्यों का पालन कर सभी उत्तरदायित्वों का वहन करना सिखाया। एक तरफ अति प्राचीन गुरुकुल पद्धति जिसका वर्णन चारों युगों में मिलता है। दूसरी ओर मजहबी शिक्षा के वो केन्द्र जिनसे राष्ट्र के लिये समृद्धि की सम्भावनाएं कम और खतरा ज्यादा निकलता है इन दोनों की आपसी तुलना करना ठीक ऐसे है जैसे गुलाब और गोभी के फूल की तुलना करना क्योंकि तुलना करने में समय व्यतीत हो सकता है किन्तु बराबरी नहीं हो सकती!

दूसरा पहलू भारत में मदरसा प्रणाली अरब, ईरान और मुगल लुटेरे लेकर आये जो 12 वीं शताब्दी से बहुत छोटे स्तर से शुरु होकर 17 वीं शताब्दी के अन्त तक भारतीय मुस्लिमों के जेहन में अपनी जगह तक नही बना पाये। 18 वीं सदी में सर्वप्रथम दिल्ली में औपचारिक संस्थानों में मदरसा-ए रहीमिया स्थापित किया गया और 1867 में मोहम्मद आबिद हुसैन व अन्य ने उत्तर प्रदेश के देवबंद में मदरसा-ए दारुल उलूम की स्थापना के साथ भारत में मदरसों की बाढ़ आ गयी मजहबी शिक्षा के ये केन्द्र केवल गरीब मुस्लिमों को धर्म के नाम पर छलते रहे जबकि इस्लाम के तथाकथित रहनुमा मोहम्मद अली जिन्ना खुद विदेश में पढ़े एक जिन्ना ही क्यूँ औवेशी, गिलानी, व अन्य मुस्लिम नेताओं के बच्चे विदेशों में पढ़कर भारत में मदरसों की मांग करते हैं क्यों?

...शेष पेज 3 पर

हे सोम! हमें पाप से सब ओर से बचा

त्वं नः सोम विश्वतो रक्षा राजन्नघायतः।
न रिश्ष्येत त्वावतः सखा।।

ऋषि :- **राहूगणो गोतमः।।** देवता- **सोमः।।** छन्दः- **गायत्री।।** -**ऋ. 1/11/8**

शब्दार्थ- **सोम**-हे सोम! राजन्- हे राजन्! हे असली राजन्! **त्वं नः**- तू हमारी, **अधयत :**- पाप चाहने वालों से **विश्वतः** - चारों ओर से **रक्ष :**- रक्षा कर। **त्वावतः सखा**- तेरे जैसे से मित्रता रखने वाला न **रिष्येत्**- कभी नष्ट नहीं होता।

विनय- हे सोमदेव! तुम्हीं वास्तव में हमारे राजा हो। यद्यपि संसार के मनुष्य-राजा भी जान-माल आदि की रक्षा करने के लिए ही होते हैं, परन्तु वे अल्पशक्ति राजा शासन की चाहे जितनी शक्ति रखते हों, तो भी हमारी पूरी तरह रक्षा नहीं कर सकते, परन्तु मुझे अपने जान-माल की ऐसी परवाह नहीं है, इनको तो मैं धर्म के लिए प्रसन्नता से जाने दूंगा, अतः हत्यारों और लुटेरों के आक्रमण से रक्षा पाने की मुझे कोई चिन्ता नहीं होती। मुझे तो चिन्ता है पाप के आक्रमण से रक्षा पाने की। इस पाप के आक्रमण से बचने की ही मुझे अत्यावश्यकता है और इस आक्रमण से तो, हे मेरे अन्तस्तम के राजन्! मुझमें अन्दर से हुकूमत करने वाले स्वामी! हे असली राजन्! तुम्हीं चारों ओर से मुझे बचा सकते हो। बड़े-से -बड़े श्रेष्ठ राजा भी अपने बाहरी सुप्रबन्ध से हमें पाप के आक्रमण से सर्वथा सुरक्षित नहीं कर सकता। इसलिए हे राजाओं के राजा परमेश्वर! हम तुम से प्रार्थना करते हैं कि तुम हमें पाप चाहने वालों से सब ओर से रक्षित करो। हे सर्वशक्तिमन्!

मैं तो अपने अन्दर तुम्हीं से सम्बन्ध जोड़ चुका हूं, मुझे अब किसका डर है? तुझ-जैसे से अपना सम्बन्ध जोड़ने वाला- तुझ सर्वशक्तिमान् शरण में पहुंचे हुए को नाश कर सकने वाली वस्तु कहां से आएगी? परन्तु तेरा ऐसा सखित्व पाने के लिए और ऐसा अमूल्य सखित्व पाकर उसको स्थिर रखने के लिए बस, पाप से सुरक्षित रहने की आवश्यकता है। इसलिए हमारी बारम्बार यही प्रार्थना है कि हमें पाप से चारों ओर से बचाइए-हमें पाप से सब ओर से बचाइए।

वैदिक विनय, वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें। - विजय आर्य
मो. 09540040339

विशेष सम्पादकीय

बुढापे का अपमान क्यों???

एक समय था जब घर में बड़े बुजुर्ग परिवार के लिये अनुभव की खान और स्नेह का साया समझे जाते थे। किन्तु आज की भागती-दौड़ती जिन्दगी उस स्नेह के साये को बोझ समझ कर दूर फेंकती जा रही जा रही है। यह हृदय को व्यथित करने वाली खबर हैं, कि शहरों में 49 प्रतिशत बुजुर्ग घर के अन्दर अनादर, प्रताड़ना अथवा हिंसा झेल रहे हैं और इसके लिए जिम्मेदार लोगों में एक बड़ा हिस्सा उच्च शिक्षा प्राप्त पुत्र तथा पुत्रवधुओं का है तो कुछ जगह रिश्तों को लेकर माता-पिता के प्रति संवेदनशील समझे जाने वाली बेटियां भी घर में बुजुर्गों के साथ बुरा बर्ताव करने में पीछे नहीं है करीब 79 प्रतिशत लोग अपने बच्चों की सामाजिक प्रतिष्ठा को बचाकर रखने के लिये इसे चुपचाप सहन कर जाते हैं। माता-पिता के त्याग तथा प्रति उत्तर में सामाजिक दायित्वों के प्रति बच्चों में बढ़ती विमुखता आज समाज को एक दयनीय स्थिति की ओर धकेल रही है। बीते कुछ वर्षों में बुजुर्गों का अपनों के द्वारा उपेक्षा का शिकार बनना हमारी बदलती सोच को रेखाकिंत कर रहा है 'वृद्धजनों' के प्रति उनके अपने ही परिवारों में उपेक्षा का शिकार होना दुखद और चिंतनीय है। जो मां-बाप अपना त्याग, अपनी ममता अपना सब कुछ बच्चों को सौंप देते हैं और बदले में बच्चे उन्हें अपमान, उपेक्षा मारपीट का व्यवहार दें तो इस पढ़े लिखे समाज की सभ्यता पर प्रश्नचिह्न जरूर लगेगा। यदि समय की सुई बीते पिछले कुछ वर्षों में ले जायें तो हम देखते हैं कि पहले ज्यादातर परिवार संयुक्त रूप से रहते थे तो उनके अन्दर प्रेम छोटे बड़े के प्रति मान-सम्मान की धारा बहती थी और हमारी इसी संस्कृति का गुणगान पूरे विश्व में गाया जाता था कि भारत दर्शन करो तो सांझा चूल्हा, सांझा परिवार देखने को मिलता है। किन्तु आज आधुनिकता की आँधी में यूरोपीय परम्परा को अपनाने की होड़ में हमने अपनी संस्कृति को स्वाह करके कुछ प्रश्नों को जिन्दा कर दिया कि आखिर भारत में वृद्ध आश्रमों की परम्परा कितनी उचित कितनी अनुचित? चलो हम मानते हैं कुछ निःसंतान बुजुर्गों की सेवा के लिये खोले गये वृद्ध आश्रम समाज सेवा भी थी और हमारा दायित्व भी था किन्तु अफसोस आज दिन-प्रतिदिन वृद्ध आश्रमों की संख्या बढ़ती जा रही है, उनमें अधिकतर वही लोग होते हैं। जिनके बेटे-बेटियां जिन्दा होते हैं और अच्छी-खासी हालत में होते है। अक्सर उम्र के इस पड़ाव पर पहुँच कर घर के बुजुर्ग अपने आपको अलग-थलग महसूस करने लगते है। संवेदनहीनता के इस दौर में उनके अपने ही इनकी भावनाओं को समझने में नाकाम होने लगते हैं और उनके अपने उन्हें उस समय दूर फेंक देते हैं जब उन्हें स्नेह और सम्मान की सबसे ज्यादा आवश्कता होती है। दिन-प्रतिदिन गिरती मानवीय संवेदनाओं को देखकर लगता है कि हमारे देश में वह दिन दूर नहीं जब बुजुर्गों की सुध लेने वाला कोई नहीं होगा। परमात्मा की परम कृपा से माता-पिता दुनिया की सबसे बड़ी प्रार्थना में से एक हैं, बहुत खुशनसीब होते हैं वह जिनको ये दोनों अथवा इनमें से किसी एक का भी सानिध्य प्राप्त है। माता- पिता हमारी सामाजिक व्यवस्था के स्तम्भ हैं, पर अफसोस आज इन स्तम्भों को नजर अंदाज किया जा रहा है। हालांकि हम सब जानते हैं कि बुढ़ापा एक न एक दिन सब के जीवन में दस्तक देगा और फिर हमारे बच्चे भी यदि हमारे साथ ऐसा ही व्यवहार करेंगे जैसा कि आज हम अपने माता-पिता के साथ कर रहे हैं तब क्या होगा। बुढ़ापे को अपमान से नहीं सम्मान से स्वीकारना चाहिए ताकि वह सम्मान कल हमें भी प्राप्त हो।

-सम्पादक

बोध कथाएं

सहनशक्ति की महिमा

महात्मा सुकरात बहुत बड़े विद्वान् और दार्शनिक थे। सारा विश्व उनका आदर करता था। परन्तु उनकी धर्मपत्नी थी क्रोध की साक्षात् मूर्ति। हर समय लड़ती थी। मीठा बोलना उसने जैसे सीखा ही नहीं था। प्रतीत होता था- चीनी उसने कम खाई, सदा कुनेन ही खाती रही।

सुकरात घर पर मौन बैठते तो वह चिल्लाना आरम्भ कर देती - ''हर समय चुप ही बैठे रहते हैं!'' वे कोई पुस्तक पढ़ते तो चिल्ला उठती - ''आग लगे इन पुस्तकों को! इन्हीं के साथ विवाह कर लेना था, मेरे साथ क्यों किया?''

एक दिन वे आये तो पत्नी ने इसी प्रकार बकना-झकना आरम्भ किया। सुकरात के कुछ विद्यार्थी और भक्त भी उनके साथ थे। उन्होंने इस बात का बहुत बुरा माना, परन्तु सुकरात मौन बैठे रहे। पत्नी ने इन्हें मौन देखा तो उसके क्रोध का पारा और भी चढ़ गया। वह और भी ऊंची आवाज में बोलने लगी। सुकरात फिर भी चुपचाप बैठे रहे। पत्नी ने तब क्रोध से पागल होकर मकान के बाहर पड़ा हुआ गन्दा कीचड़ एक बर्तन में भरा, शीघ्रता से आकर सारा कीचड़ सुकरात के सिर पर डाल दिया।

तब सुकरात हंसकर बोले- ''देवी, आज तो पुरानी कहावत अशुद्ध हो गयी। कहावत है कि गरजने वाले बरसते नहीं। आज देखा कि जो गरजते हैं वे बरसते भी हैं।''

सुकरात हंसते रहे, परन्तु उनका एक विद्यार्थी क्रोध में आ गया। उस विद्यार्थी ने चिल्लाकर कहा -''यह स्त्री तो चुड़ैल है। आपके योग्य नहीं!''

सुकरात बोले - ''नहीं, यह मेरे ही योग्य है। यह ठोकर लगा-लगाकर देखती रहती है कि सुकरात कच्चा है या पक्का। इससे बार-बार ठोकर लगाने से मुझे पता तो लगता रहता है कि मेरे अन्दर सहनशक्ति है या नहीं।''

पत्नी ने ये शब्द सुने तो झट उनके चरणों में गिर पड़ी। रोती हुई बोली - ''आप तो देवता हैं। मैंने आपको पहचाना नहीं।''

यह है तप की महिमा। तप और सहनशीलता से अन्ततोगत्वा मनुष्य को विजय प्राप्त होती है। बुरे व्यक्ति भी अपना स्वभाव बदल देते हैं।

ग्रन्थ परिचय

ऋग्वेद एवं यजुर्वेद का भाष्य

प्रश्न 1. वेदों की भूमिका के रूप में 'ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका' लिखने के पश्चात् महर्षि ने वेदों का भाष्य लिखना कब प्रारम्भ किया था?

उत्तर : 'ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका' के पश्चात् ऋग्वेद का भाष्य महर्षि दयानन्द ने विक्रमी संवत 1934,मार्गशीर्ष, शुक्लपक्ष की षष्ठी तिथि, मंगलवार के दिन लिखना प्रारम्भ किया था। यजुर्वेद भाष्य का प्रारम्भ विक्रमी संवत् 1934, पौष मास के शुक्लपक्ष में त्रयोदशी तिथि बृहस्पतिवार के दिन किया। इस प्रकार यजुर्वेद का भाष्य महर्षि ने ऋग्वेद भाष्य के प्रारम्भ करने के लगभग सवा महीने पश्चात् ही प्रारम्भ कर दिया था।

प्रश्न 2. तो क्या दोनों वेदों के भाष्य महर्षि ने एक साथ ही लिखे थे?

उत्तर : हां, ऋग्वेद और यजुर्वेद दोनों के भाष्य एक साथ ही चलते रहे।

प्रश्न 3. ये भाष्य कितने समय में पूर्ण हुये?

उत्तर : छोटा होने से यजुर्वेद का भाष्य विक्रम संवत् 1939, मार्गशीर्ष मास के कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा (पहली तिथि) को शनिवार के दिन पूरा हो गया।

इस प्रकार, लगभग पांच वर्षों में यजुर्वेद का भाष्य पूर्ण हुआ। परन्तु ऋग्वेद का भाष्य पूर्ण नहीं हो पाया। ऋग्वेद के दस मण्डल हैं,जबकि इसका भाष्य सप्तम मण्डल के, 62 वें सूक्त के दूसरे मन्त्र अर्थात् 5649 मन्त्रों तक ही हो पाया था । इसी दौरान दुर्भाग्यवश संवत् 1940, कार्तिक मास की अमावस्या अर्थात् दीपावली के दिन महर्षि का निर्वाण हो गया और यह महत्वपूर्ण कार्य अधूरा ही रह गया।

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा दूरदर्शी मानव निर्माण की योजना क्या थी, क्या हम उस पर चल रहे है

महर्षि दयानन्द जी का स्वप्न था कि बालकों को जन्म से पूर्व और पश्चात् सोलह संस्कारों को भट्ठी में डाल देने पर वह 25 वर्ष बाद युग को ही बदल देंगे। क्योंकि पुरानी पीढ़ी का स्थान आज के जन्मे बच्चे लेंगे और वे जैसे होंगे वैसा ही युग होगा।

महाभारत युद्ध के बाद भारत वर्ष का इतिहास ही बदल गया था। भारतवासी अपनी प्राचीन वैदिक संस्कार, संस्कृति व सभ्यता को भूल गये थे। परिणास्वरूप विश्व गुरू भारत अराजकता एवं ओर उच्च चरित्र संस्कारहीनता के कारण विदेशियों का गुलाम बन गया था और मानव जीवन के निर्माण के 16 संस्कार प्राय: लुप्त हो गये थे। यदि कहीं दो तीन संस्कार बने हुए भी थे तो वह अभ्रंश रूप में प्रचलित थे और वैदिक संस्कार भारत में बीता इतिहास बन गये थे। चतुर अवसरवादी मनुष ज्ञान रखने वाले धर्म के ठेकेदारों के विकृत धर्म और संस्कार व संस्कृति के द्वारा अपना-अपना मत बनाकर दुकाने खोल रखी थीं। जन साधारण भारतवासी बुरी तरह से इन धर्म के ठेकेदारों के चंगुल में फंस गये थे।

इतिहास गवाह है जब-जब मानवों ने ईश्वरीय नियम व सृष्टिक्रम व वैदिक संस्कारों की अवहेलना की तब-तब मनुष्यता मरती चली गई। आत्म रक्षा, धर्म रक्षा, समाज रक्षा और राष्ट्रीय रक्षा के आधार वैदिक संस्कार होते हैं और जब यह ही समाप्त हो गये या विकृत बन गये तो विदेशियों ने इस गिरावट का लाभ उठाया और विश्व गुरू भारत को गुलाम बनाकर नोंच डाला। इस भीषण विभिषिका में किसी भी धर्म गुरू को कोई चिंता नहीं थी चिंता थी। तो केवल अपना स्वार्थ सिद्ध करने की।

ईश्वर की कृपा से अठारहवीं सदी में युग पुरूष महर्षि दयानन्द जी का जन्म हुआ था। यह भी सत्य है कि युग पुरूष संसार के कल्याण के ही लिए जन्म लेते हैं। यह भी सत्य है कि जब-जब ईश्वरीय धर्म वैदिक धर्म समाप्त होने लगता है तो चारों ओर अनैतिकता का वातावरण पैदा हो जाता है। तब ईश्वरीय व्यवस्था से महापुरूष सीधे मोक्ष से लौटकर अधर्म का नाश करने को जन्म लेते है। वह कर्मयुक्त जीव होते हैं, संसार के बन्धनों में नहीं फंसते है और संसार को सत्य मार्ग दिखाते-दिखाते अपना जीवन बलिदान कर देते हैं।

महर्षि दयानन्द जी ने भी रण क्षेत्र में उतरकर सर्वप्रथम वेदों के रूढ़ी अर्थो पर प्रहार करके उनको इतिहासपरक न मानकर यौगिक अर्थ किए और उन्होंने समझा था कि सम्पूर्ण भारत में संस्कार हीनता का कारण वेदों के अर्थो का गलत अर्थ करके समाज को दिशाहीन कर दिया है। उन्होंने तत्कालीन तमाम विद्वानों से शास्त्रार्थ किये और वेदों के अर्थो को संसार के सामने रखा। यह एक अद्‌भुत वैचारिक क्रांति थी। जमाने के साथ न चलकर जमाने की गर्दन पकड़कर अपने पीछे चलाया। एक नई वैचारिक क्रांति का जन्म हुआ।

संस्कार विधि: महर्षि दयानन्द ने समाज में चल रहे विकृत संस्कारों को वेदानुकूल बनाने हेतु संस्कार विधि का निर्माण किया और संस्कार विधि में सोलह संस्कारों को पूर्ण मानव बनाने की योजना तैयार की। उन्होंने समझा संस्कार अपने घर से ही बदले जा सकते हैं। उन्होंने संस्कार विधि में संविधान किया कि बालक माता के गर्भ से ही तीन संस्कार होने चाहिए वह थे। गर्भधान, पुंसवन, तथा सीमन्तोन्नयन संस्कार और जन्म होने के पश्चात् जातकर्म, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूड़ाकर्म, कर्ण भेद, उपनयन, वेदारम्भ, समावर्तन, गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यास और अन्त्येष्टि कर्म। ये मानव को पूर्ण मानव बनाते है।

उनकी योजना थी कि यदि बालकों को उक्त संस्कारों की भट्‌टी में तपाया जाए तो युवा होने पर 25 वर्ष की अवस्था में एक नये युग का निर्माण हो सकता है, क्योंकि पुरानी पीढ़ी के स्थान नई पीढ़ी लेती है। यदि समस्त परिवार सोलह संस्कारों को विधिवत् करने लगेंगे तो एक आदर्श युग का निर्माण प्रारंभ हो जायेगा और वैदिक संस्कारों के चलने से तमाम अनार्ष साहित्य मान्यतायें व क्रियायें समाप्त हो जायेंगी।

सत्यार्थ प्रकाश का निर्माण:- महर्षि दयानन्द जी ने अनार्ष ज्ञान कर्मो को समाप्त करने के लिए कालजयी ग्रंथ, सत्यार्थ प्रकाश में ग्यारह सम्मुलास पूर्ण रूप से मानव बनाने का निर्देश दिया। सत्यार्थ प्रकाश ने विकृत समाज में एक हलचल मचा दी। कथित धर्म के ठेकेदारों की चूलें हिलाकर रख दी। संसार सत्यार्थ प्रकाश को पढ़कर आश्चर्यचकित रह गया कि अब तक संसारवासियों को कैसे मूर्ख बनाया जा रहा था। सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ ने एक नया इतिहास ही रच दिया।

आर्य सामाज का गठन: युग पुरुष दूरदर्शी होते है, महर्षि जी ने समझा कि यदि सोलह संस्कारों का चलन नियमित होता रहे और आर्ष विचारों का प्रचार सदैव होता रहे, उसके लिए एक आर्ष संगठन ही होना चाहिए। उन्होंने कोई भी प्रचलित मत या नया मत न बनाकर आर्य समाज का गठन किया गया या यों कहें महाभारत के पश्चात, प्राचीन आर्य संगठन की पुनरावर्ती की और जब तक संसार में आर्य समाज रहेगा तब तक आर्ष विचारों का प्रकाश पुंज प्रकाशित होता रहेगा। यह भी मानव निर्माण योजना थी।

महर्षि दयानन्द के अनुयायी से निवेदन : महर्षि दयानन्द जी ने मानव निर्माण की पूर्ण योजना हम आर्यो के समक्ष रखी। ज्यों-ज्यों आर्य समाज की उमर बढ़ रही है, वैसे-वैसे आर्य समाज के अनुयायी महर्षि के सिद्धान्तों से हटते जा रहे हैं। उन्होंने कल्पना की थी इस योजना से सारा संसार आर्य बन जायेगा, किन्तु हम स्वयं आर्य नहीं बन पा रहे हैं। हम अपने हृदय पर हाथ रख कर सोचें क्या हम अपने बालकों के पन्द्रह संस्कार कर रहे हैं। हम अपने हृदय पर हाथ रख कर सोचें क्या हम अपने बालकों के पन्द्रह संस्कार कर रहे हैं। 16वां तो अन्त्येष्टि कर्म परिवार करता है। आर्यो के परिवार भी पश्चात्य् सभ्यता के शिकार होते चले जा रहे हैं। केवल तीन चार संस्कार ही अधिकांश आर्यो के घरों में होते हैं। आज संन्यासी, वानप्रस्थ, प्रतिनिधि सभायें व प्रमुख आर्य अपनी कलह से जूझ रहे हैं और अपनी-अपनी महत्त्वाकांक्षाओं को पूर्ण करने में संघर्षरत हैं। हम आर्य, आर्य समाज की आत्मा पर आघात कर रहे हैं। यह कार्य संन्यासी वर्ग व नेतृत्व व पुरूषार्थी आर्य अच्छी प्रकार कर सकते हैं। आइये हम आज के आर्य समाज को गति देने के लिए, महर्षि दयानन्द जी के उक्त सिद्धान्तों पर चलेंगे तो निश्चिय ही 25 वर्ष बाद सम्पूर्ण भारत आर्य बन जायेगा या अपने विचारों को बदलने पर मजबूर हो जायेगा।

-पं. उम्मेद सिंह विशारद, देहरादून

आज के संस्कार

आज भारत की शिक्षा पद्धति का उद्‌देश्य भौतिक है, शिक्षा से मानव में सत्य व अध्यात्म संस्कार बनता है। आज नैतिक शिक्षा का आधार संसार खो चुका है। जब युवक पढ़-लिखकर उतरता है तो कोई डाक्टर, इंजीनियर, प्रोफेसर, वकील, साइन्टिस्ट आदि बनता है। उसमें अपने व्यवसाय के प्रति आदर्श सत्यपथ के संस्कार न होने से वह अपने-अपने पदों में भ्रष्टाचार करना शुरू कर देते हैं और सारा सामाजिक वातावरण दूषित हो जाता है और मानव की जगह दानवता पनपने लगती है। शिक्षा का आधार व्यवसायी हो गया है और इश्वरीय वैदिक संस्कार न होकर अपने-अपने कथित मजहबों में बालक को जन्म से उसी मत के संस्कार दिये जाते हैं और उसका जीवन उसी में बीत जाता है। परिणामस्वरूप आपसी विवादों के कारण सारा संसार बारूद की ढेर पर बैठा है।

पृष्ठ 1 का शेष

गुरुकुल ...

ताकि भारत का गरीब मुस्लिम अनपढ़ रहकर इनकी मजहबी राजनीति का शिकार बने रहें! लेकिन भारत देश में जिन मुस्लिमों ने बिना मदरसों के शिक्षा प्राप्त की उन्होंने राष्ट्र निर्माण में योगदान भी दिया और देश विदेश में नाम भी कमाया जिसका वर्तमान में सबसे बड़ा उदाहरण पूर्व राष्ट्रपति अब्दुल कलाम जी हैं। अब्दुल कलाम ने खुद अपनी किताब अग्नि की उड़ान में स्वीकार करते हुये लिखा है कि यदि मैं किसी मदरसे के अन्दर अरबी, फारसी सीखता तो शायद ज्यादा से ज्यादा किसी मस्जिद का इमाम बन पाता कलाम की शिक्षा पर कलाम को गर्व होने के साथ आज देश को भी गर्व है। अब यदि मैं मदरसों के सैकड़ों वो उदाहरण भी देने लग जाऊँ जो हाथ में मौत का सामान उठाकर आज पूरे विश्व में अशांति के बीज रोप रहे हैं तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होनी चाहिये शायद फडनवीस सरकार का ये फैसला उन लाखों बच्चों के पक्ष में हो जो हाथ में कलम पकड़ कर नवीनतम शिक्षा की मुख्यधारा से जुड़ना चाहते हैं। अंत में सिर्फ इतना कहना चाहूँगा कि गुरुकुल सदियों पहले भारत की सम्पन्नता के योगदान के कारक थे जो तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला विश्वविद्यालय थे जिनके ज्ञान विज्ञान की चर्चा पूरे विश्व में आज भी अंकित है अत: गुरुकुलों से मदरसों की तुलना किसी भी कोण से सही नहीं है।

-सम्पादक

आर्य समाज, दुर्गा पार्क वार्षिक उत्सव

आर्य समाज सी ब्लाक जनकपुरी एवं वेद प्रचार मण्डल पश्चिमी दिल्ली के सहयोग से ब्रह्मचारी अरुण कुमार आर्यवीर मुम्बई वैदिक साधना पद्धति के विषय में बताएंगे। **कार्यक्रम :** दिनांक 19 व 22 जुलाई से 25 जुलाई 2015 तक प्रात: 7.30 से प्रारम्भ होगा। **समापन समारोह** 26 जुलाई प्रात: 9 बजे 1 बजे **स्थान:** सी ब्लाक जनकपुरी व आर्य समाज दुर्गा पार्क में आयोजित होगा। **विनीत : श्रीमती ऊषा देवी प्रधान मो. 9990420326 श्रीमती गीता देवी, मंत्री मो. 09711482525**

आर्य स्त्री समाज गोविन्दपुरी द्वारा घर-घर यज्ञ-हर घर यज्ञ योजना फलीभूत

आर्य स्त्री समाज गोविन्दपुरी दिल्ली की बहनों ने ''घर-घर यज्ञ हर घर यज्ञ'' की घोषणा के उपरान्त श्रीमती ईश्वर रानी महता की प्रेरणा से यह संकल्प पूरा किया है। इस योजना के तहत सेन्ट्रल पार्क, कालकाजी, कालका जी विस्तार, साकेत, डी.डी.ए. फ्लैट्स कालका जी फरीदाबाद इत्यादि के विभिन्न घरों में लगभग 22 यज्ञ आयोजित किये।

प्रेरणादायक जीवन : माता विशुद्धा आर्या
80वें जन्म दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

माता विशुद्धा आर्या 80 वर्ष की अवस्था में भी पूर्णतया स्वस्थ एवं प्रसन्न हैं। वह आर्य समाज सांताक्रुज से जुड़ी हैं तथा महिला आर्य समाज की प्रधाना वर्षों तक रही हैं। माता जी के नाम से ही आर्य समाज का ई.आर.पी. सॉफ्टवेयर 'विशुद्धा' रखा गया है। आर्य समाज का आई.टी. विभाग विशुद्धा जी की ही देन है। जिसके जरिए देश के समस्त आर्य समाज एक सूत्र में बंधे हुए हैं। उनके जीवन में आलस्य, अहंकार, निंदा आदि कोसों दूर है। उनके व्यायाम, संध्या एवं भोजनादि के समय कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी निश्चित हैं। उन्हें बच्चों के साथ उन्हीं की भाषा में बात करना एवं बहुत ही रोचक ढंग से कहानियां सुनाना बहुत ही प्रिय है। विशुद्धा आर्या जी आर्य जगत् के उच्चकोटि के विचारक एवं सिद्धान्तज्ञ पं. फूलचन्द्र शर्मा निडर की सबसे छोटी सन्तान हैं। आपका जन्म 5 जुलाई 1935 को ग्राम दिनोद (भिवानी) में हुआ। आपसे पूर्व आपकी दो बहनों का नाम भी विशुद्धा रखा गया था, लेकिन दैवयोग से उनकी मुत्यु हो गई। कालांतर में गुरेरा (भिवानी) के प्रसिद्ध परिवार में ला. रामेश्वरदास जी आर्य के सुपुत्र श्री रामरिछपाल आर्य के साथ आपका विवाह हुआ और पश्चात् में दो पुत्र एवं दो पुत्रियों की संस्कारित संतान मिली। छोटे पुत्र सुरेंद्र आर्य आटो कम्पोनेंट बनाने वाले प्रसिद्ध ग्रुप जे.बी. एम. ग्रुप के चेयरमैन हैं। विशुद्धा जी बम्बई में रहती हैं। ईश्वर से माता जी हेतु दीर्घायु एवं सुंदर स्वास्थ्य की कामना है। जन्मदिवस की बधाई।

माता जी के नाम से ही आर्य समाज का आईटी प्रोजैक्ट संचालित है।

-विनय आर्य

दिल्ली में सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल का राष्ट्रीय शिविर सम्पन्न

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल का राष्ट्रीय शिविर 28 जून 2015 को एस. एम. आर्य पब्लिक स्कूल पंजाबी बाग में सफलता के साथ सम्पन्न हुआ। शिविर श्री सत्यानन्द जी आर्य की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। मुख्य अतिथि श्री अशोक चौहान, चेयरमैन एमिटी यूनिवर्सिटी ने कहा कि ये शिविर ही बालिकाओं में आत्मविश्वास, सुसंस्कार व आत्मनिर्भर बना सकते हैं। समारोह ध्वजारोहण से प्रारम्भ हुआ तथा व्यायाम, सूर्य नमस्कार, भूमि नमस्कार, नियुद्धम, लाठी, भाला, छुरी, डम्बल, लेजियम तथा तलवार आदि के प्रदर्शन ने सभी को रोमांचित कर दिया। वीरांगनाओं द्वारा हाथ से, सिर से तथा किक द्वारा टाईल्स तोड़ने का प्रदर्शन उत्साहवर्धक रहा। मंच संचालन श्रीमती आरती खुराना ने किया। श्रीमती अभिलाषा आर्य, श्री सत्यम आर्य, श्री सचिन आर्य ने वीरांगनाओं को प्रशिक्षित किया। शिविर में दिल्ली संस्कृत अकादमी की ओर से वीरांगनाओं को दस दिनों तक संस्कृत सम्भाषण का कोर्स कराया गया। 20 शिक्षिकाओं को अलग से 'शिक्षिका पाठ्यक्रम' के द्वारा शिक्षिका सम्मान प्रदान किया गया। सर्वश्रेष्ठ शिक्षिका का सम्मान कु. रिंकल गुप्ता को प्राप्त हुआ। शिविर में अलग-अलग प्रान्तों से लगभग 150 वीरांगनाओं ने भाग लिया। शिविर में उपस्थित गणमान्य व्यक्ति सर्वश्री अशोक चौहान, आनन्द चौहान, अजय चौहान, सत्यानन्द श्री, राजीव आर्य, मदन मोहन सलूजा जी, राज कुमार, शिव कुमार मदान जी, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री विनय आर्य, ब्र. सुमेधा जी, शारदाजी, शीला ग्रोवरजी, प्रधानाचार्या श्रीमती अंजलि कोहली आदि ने मंच की शोभा बढ़ाई। हमारी सभी कार्यकारिणी बहनों में मृदुला चौहान, विमला मलिक, सत्या चुघ, कमला आर्य, रूपवती देवड़ा जोधपुर, प्रकाश कथुरिया, मालतीजी आदि के अथक परिश्रम करके शिविर को सफल बनया। शिविर के अन्त में सार्वदेशिक आर्य वीरांगनादल की प्रधान संचालिका साध्वी डॉ. उत्तमा यदि ने सभी का धन्यवाद किया तथा अगला शिविर मध्य प्रदेश में आयोजित होगा यह घोषणा की।

-साध्वी डॉ. उत्तमायति, प्रधान संचालिका

ब्रेल लिपि में सत्यार्थ प्रकाश वितरित

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने प्रजाचक्षु महानुभावों को सत्यार्थ प्रकाश के ज्ञान से अवगत कराने के उद्देश्य से महर्षि दयानन्द रचित सत्यार्थ प्रकाश का ब्रेल लिपि में अनुवाद करवाया है जोकि अंध विद्यार्थियों के आध्यात्मिक ज्ञान व आर्य साहित्य को जन-जन तक पहुंचाने व बढ़ाने के लिए एक सराहनीय कार्य किया है। अभी तक रामायण, महाभारत, कुरान व बाईबल का ब्रेल लिपि में अनुवाद तो किया गया था, लेकिन सत्यार्थ प्रकाश का ब्रेल लिपि में प्रकाशन का कार्य दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने पहली बार किया है। इसकी कीमत मात्र 2000/- है। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा शीघ्र ही इस पुस्तक की प्रतियां देश के विभिन्न क्षेत्रों में चल रहे अंध विद्यालयों व अंध महाविद्यालयों की लाईब्रेरी में भेज दिया गया है आप भी इसमें सहयोगी बन सकते हैं अपने निकटतम अंध विद्यालय में जाकर उनके पदाधिकारियों से मिलकर इस पुस्तक की प्रति उनके संस्थान को भेंट कर सकते हैं।

प्रवेश सूचना

ज्ञान गंगा गुरुकुल महाविद्यालय तारापुर गौंडा, अलीगढ़ (उ.प्र.) में कक्षा 5 उत्तीर्ण 10 वर्षीय पूर्ण स्वस्थ छात्रकों का प्रवेश प्रारम्भ है। विद्यालय में वेदादि शास्त्र, अंग्रेजी, गणित, विज्ञान आदि सभी विषयों का ज्ञान प्रदान किया जाता है।
गरीब, मेघावी एवं जरूरतमंद छात्रों को पुस्तक, कोष व अन्य आर्थिक सहायता प्रदान की जाती है।

प्रवेश हेतु सम्पर्क करें-

प्राचार्य बच्चू सिंह आर्य मो. 09084180100 संस्थापक/मुख्याधिष्ठाता स्वामी प्रशान्तानन्द सरस्वती मो. 09536100997

महाशय धर्मपाल दयानन्द आर्य विद्या निकेतन बामनियां (म.प्र.) उन्नति की ओर
विद्यालय में यज्ञ करते विद्यार्थी व अधिकारीगण

मध्य प्रदेश के ठेठ आदिवासी क्षेत्र झाबुआ जिले में स्थापित महाशय धर्मपाल दयानन्द आर्य विद्या निकेतन बामनियां प्रगति की ऊँचाईयों को छू रहा है। विद्यालय में एक वर्ष के अन्दर 500 से अधिक बच्चों के दाखिले और छात्रावास में लगभग 35 बच्चों ने प्रवेश लिया। विद्यालय में विद्यार्थियों के लिये आधुनिक शिक्षा प्रणाली के तहत जहां कम्प्यूटर, सांईस लैब, लाईब्रेरी स्मार्ट क्लास की व्यवस्था है, वहीं बच्चों को विद्यालय में लाने-ले जाने के लिये 5 बड़ी बसें व 2जीप की नियमित सेवाएं प्रदान की जा रही हैं। विद्यालय के अन्दर दैनिक यज्ञ, संध्या-उपासना का कार्य भी नियमित रूप से संचालित किया जाता है। पिछले दिनों दयानन्द सेवाश्रम संघ के पदाधिकारियों ने विद्यालय का दौरा किया जिसमें एम. डी.एच. परिवार के श्री प्रेम कुमार अरोड़ा व श्री अनिल कुमार अरोड़ा जी भी सम्मिलित थे उन्होंने विद्यालय की वर्तमान प्रगति को देखा और कहा कि शीघ्र ही विद्यालय का और विस्तार किया जाएगा जिसके लिए आवश्यक कदम उठाए जायेंगे ताकि उपरोक्त विद्यालय झाबुआ क्षेत्र का सबसे बड़ा विद्यालय बन कर उभरे।

'अंतर्विद्यालयीय नारा लेखन प्रतियोगिता सम्पन्न'

आर्य विद्यालयों के विद्यार्थी प्रतिभाशाली–उषा किरण आर्या

आर्य विद्यालयों में सभी बच्चों के सर्वांगीण विकास पर विशेष ध्यान दिया जाता है। बच्चों में छिपी प्रतिभा को निखारने के लिए शिक्षण के साथ-साथ अन्य गतिविधियों पर भी विशेष व्यवस्थाएं इन विद्यालयों में की जा रही है। जिसके फलस्वरूप इन विद्यालयों में शिक्षा ग्रहण कर रहे विद्यार्थी अपने कौशल के अनुरूप आगे बढ़ रहे हैं।

इन्हीं प्रतिभाओं को आगे बढ़ाने के लिए आर्य विद्या परिषद दिली की आरे से विभिन्न आयोजन किए जाते हैं। अभी इस शैक्षिण सत्र में भी विभिन्न अंतर्विद्यालयीय प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जा रहा है। मंगलवार, 7 जुलाई 2015 को इन्हीं प्रतियोगिताओं की श्रृंखला में 'नारा लेखन' प्रतियोगिता का अयोजन दयानन्द मॉडल सैकेंड्री स्कूल, विवेक विहार में हुआ। विभिन्न आर्य विद्यालयों के विद्यार्थियों ने इस प्रतियोगिता में भाग लिया। चार वर्गो में व्यवस्थित इस प्रतियोगिता में बच्चों ने स्वच्छता, पर्यावरण, अंधविश्वास और पाखंड एवं यज्ञ पर सुन्दर नारे लिखे। इस अवसर पर उपस्थित आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य की उपप्रधाना श्रीमती उषा किरण आर्या जी ने बच्चों के इस कार्य को देखकर प्रसन्नता व्यक्त की। सभी अध्यापिका को बच्चों के उत्तम निर्माण में अग्रणी रहने और आर्य विद्या परिषद के अधिकारियों को इन प्रतियोगिताओं के अयोजन के लिए बधाई व शुभकामनाएं दी।

सभी प्रतियोगियों को सुन्दर प्रमाण पत्र व कॉमिक्स और विजेताओं को सुन्दर मैडल भी देकर सम्मानित किया गया। इस प्रतियोगिता के आयोजन की व्यवस्था दयानन्द मॉडल सैकेंड्री स्कूल विवेक विहार के प्रबंधक श्री प्रवीण भाटिया जी ने की। विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती सीमा भाटिया जी ने उपस्थित सभी अध्यापिकाओं व बच्चों का धन्यवाद किया। कार्यक्रम के अंत में जलपान की व्यवस्था की गई।

विभिन्न वर्गों में विजेता प्रतियोगियों के नाम :-

वर्ग	विद्यार्थी	विद्यालय	स्थान
1	संध्या	रतनचन्द आर्य पब्लिक स्कूल सरोजीनी नगर	1
	हिमांशु	रतनचन्द आर्य पब्लिक स्कूल सरोजीनी नगर	2
	प्रियंका	रतनचन्द आर्य पब्लिक स्कूल सरोजीनी नगर	3
2	दिव्या गोयल	दयानन्द मॉडल सैं स्कूल विवेक विहार	1
	नेहा यदवी	दयानन्द आदर्श विद्यालय तिलक नगर	2
	अश्विन सिंह	एस.एम. आर्य पब्लिक स्कूल, पंजाबी बाग	3
3	आरती	दयानन्द आदर्श विद्यालय, तिलक नगर	1
	रूचि तोमर	दयानन्द मॉडल सै. स्कूल, विवेक विहार	3
	कीर्ति मेहता	दयानन्द आदर्श विद्यालय, तिलक नगर	2
4	दीप आर्य	एस.एम. आर्य पब्लिक स्कूल पंजाबी बाग	1
	कृष्ण	एस.एम. आर्य पब्लिक स्कूल पंजाबी बाग	2
	दीना नैदिंग	एस.एम. आर्य पब्लिक स्कूल पंजाबी बाग	3

नारा लेखन प्रतियोगिता की झलकियां

आगामी प्रतियोगिता का विवरण पृष्ठ 8 पर देखें।

पेज 1 का शेष **'महर्षि दयानन्द ...**

रहता, हम गुलाम न होते, कहीं मूर्तिपूजा, फलित ज्योतिष, बालविवाह, अस्पर्शयता वा सामाजिक विषमता, मृतक श्राद्ध आदि जैसी कुरीतियां समाज में न होती। आगे महर्षि दयानन्द मनुजी के वचनों को हिन्दी भाषा में प्रस्तुत कर रहे हैं जो संसार में पहली बार हिन्दी प्रेमियों को उनकी ओर से भेंट प्रस्तुत की गई है। वह लिखते हैं कि मनुष्यों को सदा इस बात पर ध्यान रखना चाहिये कि जिस का सेवन राग-द्वेषरहित विद्वान लोग नित्य करें, जिस को हृदय अर्थात् आत्मा से सत्य कर्त्तव्य जानें, वहीं धर्म माननीय और करणीय है। दूसरे उपदेश में वह कहते हैं कि इस संसार में अत्यन्त कामात्मता और निष्कामता श्रेष्ठ नहीं है क्योंकि वेदार्थज्ञान और वेदोक्तकर्म, ये सब कामना ही से सिद्ध होते हैं। जो कोई कहे कि मैं निरिच्छ (इच्छारहित) और निष्काम हूं वा हो जाऊं तो वह कभी नही हो सकता क्योंकि सब काम अर्थात् यज्ञ, सत्याभाषणादि व्रत, यम-नियमरूपी धर्म आदि संकल्प (वा इच्छा) ही से बनते हैं। वह कहते हैं कि जो-जो हस्त, पाद, नेत्र, मन आदि चलाये जाते हैं वे सब कामना ही से चलते हैं। जो इच्छा न हो तो आंख का खोलना और मीचना भी नहीं हो सकता। इसलिये सम्पूर्ण वेद, मनुस्मृति तथा ऋषिप्रणीत शास्त्र, सत्पुरूषों का आचार और जिस-जिस कर्म में अपना आत्मा प्रसन्न रहे अर्थात् भय, शंका, लज्जा जिस में न हो उन कर्मो का सेवन करना उचित है। देखो ! जब कोई मिथ्याभाषण, चोरी आदि की इच्छा करता है तभी उस के आत्मा में भय, शंका, लज्जा अवश्य उत्पन्न होती है (इसे परमात्मा उत्पन्न कराता है) इसलिये वह कर्म करने योग्य नहीं है। मनुष्य सम्पूर्ण शास्त्र, वेद, सत्पुरूषों का आचार अर्थात् आचरण व व्यवहार, अपने आत्मा के अविरूद्ध अच्छे प्रकार विचार कर ज्ञाननेत्र करके श्रुति-प्रमाण से स्वावत्मानुकूल धर्म में प्रवेश करें क्योंकि जो मनुष्य वेदोक्त धर्म और जो वेद से अविरूद्ध स्मृत्युक्त घर्म का अनुष्ठान करता है वह इस लोक में कीर्ति और मरके सर्वोत्तम सुख को प्राप्त होता है। यहां मरने के पश्चात सर्वोत्तम सुख को प्राप्त होने का जो उल्लेख है वह यह है कि वह पुनर्जन्म लेकर इस जन्म से अधिक श्रेष्ठ स्थिति को प्राप्त करता है या उसका मोक्ष हो जाता है। यह भी ज्ञातव्य है कि श्रुति वेद को कहते हैं और स्मृति धर्मशास्त्र अर्थात् मनुस्मृति को कहते हैं। इन दोनों ग्रन्थों से सब कर्त्तव्य और अकर्त्तव्यों का निश्चय करना चाहिये। मनु जी कहते हैं कि जो कोई मनुष्य वेद और वेदानुकूल आप्तग्रन्थों का अपमान करे उस को श्रेष्ठ लोग जातिबाह्य कर दें क्योंकि जो वेद की निन्दा करता है वही नास्तिक कहाता है। यह भी ज्ञातव्य है कि मनुस्मृति के विधानों का प्रयोग महाभारतकाल वा उससे कुछ शताब्दी वर्ष पूर्व तक संसार में होता चला आया है, उसका अनुमान किया जाता है क्योंकि तब मनुस्मृति के तुल्य व इतर अन्य कोई विधान नहीं था। महर्षि दयानन्द मनुस्मृति की शिक्षा के आधार पर सत्यार्थप्रकाश में एक श्लोक को प्रस्तुत करते हुए कहते हैं कि इसलिये वेद, स्मृति, सत्पुरूषों का आचार और अपने आत्मा के ज्ञान से अविरूद्ध प्रियाचरण, ये चार धर्म के लक्षण हैं अर्थात् इन्हीं से धर्म लक्षित होता है। यहां यह भी बता दें कि मनुस्मृति के यह विधान वेदानुकूल होने से आज भी प्रमाण हैं और यह आज भी प्रासंगिक एवं व्यवहारिक है। धर्म विषयक यह जानना सभी के लिए महत्वपूर्ण है कि जो द्रव्यों के लोभ और काम अर्थात विषय सेवा में फंसा हुआ नहीं होता उसी को धर्म का ज्ञान होता है। जो धर्म को जानने की इच्छा करे उनके लिये वेद ही परम प्रमाण है। इसका अर्थ है धर्म का ज्ञान प्राप्त करने के लिए वेद से बढ़कर संसार में कोई ग्रन्थ या विचारधारा नहीं है। महर्षि दयानन्द बताते हैं कि सब मनुष्यों को उचित है कि वेदोक्त पुण्यरूप कर्मो से ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य अपने सन्तानों का निषेकादि (गर्भाधान आदि) संस्कार करें जो इस जन्म वा परजन्म में पवित्र करने वाले हैं। महर्षि दयानन्द मनुस्मृति के आधार पर कहते हैं कि मनुष्य का यही मुख्य आचार है कि जो इन्द्रियां चित्त का हरण करने वाले विषयों में प्रवृत्त कराती हैं, उन को रोकने में प्रयत्न करें जैसे घोड़ों को सारथि रोक कर शुद्ध मार्ग में चलाता है। इस प्रकार अपनी सभी इन्द्रियों को अपने वश में करके अधर्म मार्ग से हटा के धर्म मार्ग में सदा चलाया करें क्योंकि इन्द्रियों को विषयसक्ति और अधर्म में चलाने से मनुष्य निश्चित दोष को प्राप्त होता है और जब इन को जीत कर धर्म में चलाता है तभी अभीष्ट सिद्धि को प्राप्त होता है। यह निश्चय है कि जैसे अग्नि में इन्धन और घी डालने से बढ़ता है वैसे ही कामों के उपभोग से काम शान्त कभी नहीं होता किन्तु बढ़ता ही जाता है। इसलिये मनुष्य को विषयासक्त कभी न होना चाहिये। जो अजितेन्द्रिय पुरूष हैं उसको **''विप्रदुष्ट''** कहते हैं। उस के करने से न वेद ज्ञान, न त्याग, न यज्ञ, न नियम और न धर्माचरण सिद्धि को प्राप्त होते हैं किन्तु ये सब जितेन्द्रिय धार्मिकजनों को सिद्ध होते हैं। राजर्षि मनु व महर्षि दयानन्द कहते हैं कि इसलिये पांच कर्म, पांच ज्ञानेन्द्रिय और ग्यारहवें मन को अपने वश में करके युक्ताहार विहार योग से शरीर की रक्षा करता हुआ सब अर्थो को सिद्ध करे। **जितेन्द्रिय पुरूष वा मनुष्य वह होता है जो स्तुति सुन के हर्ष और निन्दा सुन के शोक, अच्छा स्पर्श करके सुख और दुष्ट स्पर्श से दुःख, सुन्दर रूप देख के प्रसन्न और दुष्ट रूप देख के अप्रसन्न, उत्तम भोजन करके आनन्दित और निकृष्ट भोजन करके दुःखित, सुगन्ध में रूचि और दुर्गन्ध में अरूचि नहीं करता है। महर्षि दयानन्द ने अपने जीवन में मनुष्य में इन गुणों व लक्षणों को सत्य सिद्ध कर दिखाया।** उनके शिष्यों ने भी उनके इन गुणों का ग्रहण व धारण कर समाज में प्रेरणादायक उदाहरण प्रस्तुत किये। आज समाज व देश सहित सभी मत-धर्मो में ऐसे लोगों का मिलना अति दुष्कर है। सभी लोग बातें तो बड़ी करते हैं परन्तु उनका व्यक्ति जीवन व चरित्र इसके सर्वथा विपरीत ही देखने को मिलता है। अन्त में महर्षि दयानन्द को प्रिय महर्षि मनु के कुछ और वचनों को प्रस्तुत कर इस लेख को विराम देते हैं। वह लिखते हैं कि एक धन, दूसरे बन्धु कुटुम्ब कुल, तीसरी अवस्था, चौथा उत्तम कर्म और पांचवीं श्रेष्ठ विद्या, ये पांच मान्य के स्थान है। **परन्तु धन से उत्तम बन्धु, बन्धु से अधिक अवस्था, अवस्था से श्रेष्ठ कर्म और कर्म से पवित्र विद्या वाले उत्तरोत्तर अधिक माननीय हैं क्यांकि चाहे सौ वर्ष का भी हो परन्तु जे विद्या विज्ञान रहित है वह बालक और जो विद्या विज्ञान का दाता है उस बालक को भी वृद्ध मानना चाहिये।** क्योंकि सब शास्त्र आप्त विद्वान अज्ञानी को बालक और ज्ञानी को पिता कहते हैं। वह कहते हैं कि अधिक वर्षो के बीतने, श्वेत बाल के होने, अधिक धन से और बड़े कुटुम्ब के होने से वृद्ध नहीं होता। किन्तु ऋषि महात्माओं का यही निश्चय है कि जो हमारे बीच में विद्या विज्ञान में अधिक है, वही वृद्ध पुरूष कहाता है। ब्राह्मण ज्ञान से, क्षत्रिय बल से, वैश्य धनधान्य से और शूद्र जन्म अर्थात् अधिक आयु से वृद्ध होता हैं।

महर्षि मनु के इन सभी वचनों जिनका समर्थन महर्षि दयानन्द ने किया है, ब्राह्मण, क्षत्रिय आदि कहाने व मानने वालों को विचार करना चाहिये। इससे यह अनुमान होता है कि आज के समाज में ब्राह्मण व क्षत्रियादि कोई नहीं है क्योंकि यह सभी वेद एवं वैदिक शास्त्रों के ज्ञान से रहित व आचरण से अपरिचित व हीन है।

महर्षि दयानन्द के जीवनकल्याण विषयक सर्वोत्तम विचारों को जानने के लिए हम प्रत्येक पाठक व व्यक्ति को सत्यार्थ प्रकाश का राग- द्वेष- आग्रह- हठ- स्वार्थ से ऊपर उठकर अध्ययन करने का निवेदन करते हैं। हमने अपने अध्ययन में यह पाया है कि संसार में सत्यार्थ प्रकाश से बढ़कर जीवन के कल्याण की शिक्षा देने वाला अन्य कोई ग्रन्थ नहीं है।

-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।

शोक समाचार

श्रीमती मेवा देवी का निधन

आर्य समाज सागरपुर नई दिल्ली के उपप्रधान श्री फूलसिंह आर्य की धर्मपत्नी श्रीमती मेवा देवी का निधन हो गया।

श्रीमती राज कुमारी वधवा का निधन

आर्य समाज मोती नगर, नई दिल्ली के मंत्री श्री प्रवीण वधवा जी की पूज्य माता जी श्रीमती राज कुमारी वधवा जी का 4 जुलाई 2015 को निधन हो गया। उनकी स्मृति में शांति यज्ञ 7 जुलाई को आर्य समाज पंजाबी बाग पश्चिम में सम्पन्न हुआ जिसमें सभा अधिकारियों के साथ-साथ दिल्ली के अनेक आर्य समाजों व पदाधिकारियों ने पहुंचकर श्रद्धांजलि अर्पित की।

श्रीमती भगवानो देवी का निधन

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालयाध्यक्ष श्री अशोक कुमार जी की छोटी मां (मौसी जी) एवं उनके चाचा श्री जयचंद जी की धर्मपत्नी श्रीमती भगवानो देवी का 3 जुलाई 2015 को निधन हो गया। वे लगभग 65 वर्ष की थी। वे अपने पीछे तीन सुपत्र एवं एक सुपुत्री का भरापूरा परिवार छोड़ गई हैं। उनकी स्मृति में शांति यज्ञ एवं रस्म पगड़ी 13 जुलाई 2015 को उनके निवास स्थान बी-202 नत्थूपुरा गांव दिल्ली में सम्पन्न होगी।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य संदेश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति सामर्थ्य एवं उनके पद चिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करें। -सम्पादक

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36=16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36=16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30=8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

मानव जीवन में संस्कार और उनका महत्व

श्री गौरी शंकर भारद्वाज द्वारा लिखित लेख मानव जीवन में संस्कारों के महत्व में पिछले अंक में अपने संस्कारों के विषय में विस्तार से पढ़ा और कौने-कौने से संस्कार मानव जीवन के आधार स्तम्भ माने गए हैं। आईए जाने उन संस्कारों को ***-सम्पादक***

गतांक से आगे **विवाह संस्कार** - ब्रह्मचर्य काल समाप्ति के पश्चात् सांसारिक जीवन में प्रवेश करने हेतु गृहस्थाश्रम में प्रवेश के लिये विवाह संस्कार किया जाता है।

'काम' मनुष्य की प्रधानमूल-प्रवृति है, जो स्त्री-पुरुष में परस्पर आकर्षण पैदा करती है। 'काम' को पशु प्रवृत्ति में बदलने से रोकने के लिये तथा संतानोत्पति के लिए विवाह संस्कार किया जाता है। पति-पत्नी में शारीरिक संबन्ध की कामना के साथ-साथ जब मानसिक, सामाजिकऔर आध्यात्मिक संबन्धों का संमिश्रण होता है, तब वह विवाह कहलाता है।

विवाह संस्कार को पाणिग्रहण संस्कार भी कहते हैं, क्योंकि इसमें वर-पत्नी का हाथ पकड़ कर उसकी रक्षा और सम्मान का वचन देता है। अथर्व वेद के मंत्र 14-1-52में लिखा है 'ओ३म् भगस्ते हस्त मग्रमीत सविता हस्तमग्रमीत पत्नी त्वमसिधर्मणा हं ग्रहपतिस्तव। अर्थात् हे प्रिये ऐश्वर्ययुक्त मैं तेरे हाथको ग्रहण करता हूं। तू मेरे धर्म युक्त मार्ग में प्रेरक मेरी धर्मपत्नी है और मैं धर्मानुसार तेरा पति हूं। हम दोनों मिलकर गृहस्थ के कार्यो की सिद्धि करें। हम सदाचरण करें जिसमें उत्तम संतान और ऐश्वर्य की सदा वृद्धि होती रहे। ऋग्वेद के मंत्र (10-85-47) समंजन्तुविश्वेदेवा: समापोहृद्यानि नो ''में अर्थात् पति-पत्नी दोनों एक साथ कामना करते हैं कि विवाह में उपस्थित विद्वान तथा वृद्धजन हम दोनों को एक कर दें। हम दोनों के हृदय मिलकर ऐसे हो जायें जैसे पानी में मिलकर पानी एक हो जाता है।''

विवाह-मण्डप में विराजमान सभी विद्वान तथा स्वजन व परिजन आशीर्वाद देते हुए कहते हैं कि इहेमाविन्द्रे संनुद चक्रवाकेव दम्पति। प्रजयैनौ स्वस्स्तकौ विश्वमायुतर्यश्नुताम्।। अथर्व वेद 14-2-64 अर्थात् 'हे प्रभु इस संसार में इस दम्पत्ति को इस प्रकार शुभ प्रेरणा दो कि वे परस्पर चकवा-चकवी की भांति प्रेम करें। ये दोनों उत्तम सन्तान के साथ सद्गृहस्थी होते हुये पूर्णायु व सुख भोगें।' विवाह से पूर्व वर-कन्या के गुण-कर्म-स्वभाव समान होने पर ही वाग्दान करें। विवाह शुक्ल पक्ष में शुभ दिन होना चाहिए। संगोत्र तथा सपिण्ड विवाह नहीं होना चाहिए शास्त्रों में लिखा है कि ''दुहिता दुर्हिता दूर हिता भवतीति (निरुक्त शास्त्र) अर्थात् पुत्री का विवाह जितना अधिक दूर प्रदेशमें होगा, उतना ही अधिक कल्याणकारी होगा।

विवाह की पूर्णाविधि एवं मंत्र विस्तार भय के कारण लिखना सम्भव नहीं है। संक्षेप में विवाह संस्कार में मधुपर्क, ग्रंथिबंधन,शिलारोहण, कन्या-वर की ओर से वचन, सप्तपदी तथा ध्रुवदर्शन आदि कर्मकाण्ड सम्पादित किये जाते हैं। विवाह का अधिकार उसी पुरुष को होना चाहिए जो पूर्ण स्वस्थ होने के साथ गृहस्थी का सम्पूर्ण निर्वाह पूर्ण सफलता के साथ निर्वाह कर सके।

वानप्रस्थ संस्कार - वानप्रस्थ संस्कार तब किया जाता है जब पुत्र का भी पुत्र हो जाये तथा पुत्र गृहस्थी का भार उठाने में समर्थ हो जाये, तब व्यक्ति वानप्रस्थ आश्रम में प्रवेश करने का अधिकारी होता है। मनुस्मृति में लिखा है कि सन्त्यज्य ग्राम्यमाहारां सर्वचेय परिच्छदम पुत्रेषु भार्यानीक्षिप्य वनं गच्छेत्सहैववा अर्थात् जब व्यक्ति वानप्रस्थ की दीक्षा ले तब ग्रामों में उत्पन्न हुये कच्चे पदार्थो का आहार करे तथा घर के सब पदार्थो को छोड़ कर तथा पत्नी को अपने पुत्रों के साथ छोड़ कर अथवा पत्नी को साथ लेकर वन को प्रस्थान करे तथा वन में आश्रम बनाकर सम्पूर्ण भोग-विलास त्याग कर तपमय जीवन व्यतीत करे। ज्ञानार्जन करें। आधुनिक युग के सन्दर्भ में वानप्रस्थी गृह त्याग कर जनसेवा में पूर्णतया संलग्न हों। उसके पुत्र व स्वजन उसके पास आकर उससे धर्मचर्चा एवं मार्गदर्शन प्राप्त कर सकते हैं।

संन्यास संस्कार - जब व्यक्ति में मोहमाया का त्याग तथा वैराग्य की भावना उत्पन्न होती है तथा आत्मोन्नति हेतु सांसारिकता की भावना से मुक्त होकर एकांत में ईश्वर स्तुति उपासना आराधना ध्यान और कठोर तपस्या करने को स्वप्रेरित ज्ञान होता है तब वह संन्यास संस्कार कराने का अधिकारी है। संन्यासी होकर ही मनुष्य मोक्ष प्राप्त कर सकता है। किन्तु शास्त्रज्ञों का कहना है कि संन्यासी को केवल अपनी आत्मोन्नति में ही लीन नहीं रहना चहिए अपितु संसार के परोपकार के लिये भी प्रयासरत रहना चाहिए। संन्यास बहुत कठिन व्रत है। संन्यासी को पूर्णतया पुत्रवणा विक्षेषणा तथा लोकेष्णा का परित्याग करना पड़ता है। आजकल अनेक तथा कथित संन्यासी मठाधीश बन कर कुबेर के खजानों पर आरूढ़ हैं तथा अनेक विधायक एवं सांसद बन गये हैं। इसके अतिरिक्त संन्यासी होने के सम्मान हेतु अनेक अशिक्षित व अर्धशिक्षित व्यक्ति संन्यासी का चोला धारण कर लेते हैं।

नारि मुइ और सम्पति नासी। मुड़ मुड़ाय भये संन्यासी।।

आत्म प्रेरित तथा सुपात्र व्यक्ति को किसी महान विद्वान चिंतक ईश्वर-भक्त बीत रागी संन्यासी द्वारा ही संन्यास की दीक्षा देनी अथवा संन्यास संस्कार कराना चाहिए। अधिकतर संन्यास की दीक्षा या संस्कार वानप्रस्थ के पश्चात् ली जाती है किन्तु वैराग्य होने पर ब्रह्मचर्य आश्रम समाप्त होने के पश्चात् भी सीधे संन्यासी बनने की दीक्षा ली जा सकती है। यज्ञ वेदी पर संन्यास की दीक्षा लेने से पूर्व उसका मुंडन होता है एवं शिखा व यज्ञोपवीत को त्याग दिया जाता है। गेरुए वस्त्र धारण किये जाते हैं। संस्कार से पहले से अन्न का त्याग करके केवल दुग्धपान करना पड़ता है। भूमि पर शयन करना पड़ता है। संन्यासी ईश्वर भक्ति व साधना में लीन रहने के साथ-साथ मानव कल्याण हेतु सदैव सत्योपदेश करता है।

अंत्येष्टि संस्कार - यह मावन शरीर का अंतिम संस्कार है। भष्मातंशरीरम् यजुर्वेद 15/40 अर्थात् अंत्येष्टि का अर्थ शरीर को जलाना है मनु स्मृति के अनुसार निषेका दिश्मशानांते। मन्त्रेयस्योदितो विधि:।। अर्थात् शरीर का आरम्भ ऋतु दान और अंत में शमशान अर्थात् मृतक कर्म है। आजकल विद्युत शव दाह भी किया जाता है जो अवैदिक एवं अशास्त्रीय है। शव के स्नान कराने के पश्चात् चंदन आदि से सुगंध लेपन करके नवीन वस्त्र धारण करायें यदि जितना संभव हो मृत शरीर का जितना भार हो, उतना घृत, उतना ही चन्दन तथा अल्प मात्रा में केसर व कपूर आदि तथा पलाश की लकड़ियों से ढककर उस पर सुगन्धित सामग्री एवं घृत डाल कर बड़ा पुत्र या पुत्री मुखाग्नि देकर शमशान में अंत्येष्टि संस्कार करे।

-गौरी शंकर भारद्वाज,
पूर्व विधायक

पुस्तक समीक्षा

पुस्तक का नाम : 'बाईबिल- ईश्वरीय सन्देश!'
लेखक : हरिकृष्ण
पृष्ठ संख्या : 157
मूल्य : 100 रु.

बाईबिल-ईश्वरीय सन्देश पुस्तक 26 अध्यायों में विभक्त है इसमें बाईबिल के परिचय के साथ 19 अघ्यायों में तर्क व बाईबिल के 300 से अधिक उद्धारणों से यह बताया गया है कि बाईबिल एक ईश्वरीय ग्रन्थ नहीं वरन् सामान्य पुस्तक मात्र है। इसमें बताया गया है कि, बाईबिल सृष्टि के आरम्भ में नहीं आई, बाईबिल का परमेश्वर साकार, पक्षपाती, निष्ठुर, ईर्ष्यालु आदि है, बाईबिल तर्कपूर्ण नहीं वरन् पारस्परिक विरोधों, असम्बद्ध विषयों व अनावश्यक पुनरावृत्तियों से पूर्ण पुस्तक

है, पुस्तक में शैतान एवं ईसा से सम्बन्धित अनेक भ्रान्तियां स्पष्ट की गयी हैं।

पुस्तक का प्राक्कथन आर्य जगत के सम्माननीय वयोवृद्ध, विभिन्न पुस्तकों कि प्रतिष्ठित लेखक, बहुभाषी, इतिहासज्ञ, ईसयाईयश्त व इस्लाम के मर्मज्ञ, दयानन्द के अनन्य भक्त, प्रा. श्री राजेन्द्र जी जिज्ञासु ने लिखा है, कि ''खोजपूर्ण, मौलिक व पठनीय... विषय महत्त्वपूर्ण तथा व्यापक अध्ययन करके लिखी गयी पुस्तक....ठूंस-ठूंसकर नई-नई जानकारियां व विचारोत्तेजक सामग्री....एक भी ...वाक्य अनावश्यक, अनुपयोगी या फालतू नहीं,....पुस्तक गागर में सागर.... पं. लेखराम जी, स्वामी दर्शनानन्द जी, पं. चमुपति जी तथा पं. गंगाप्रसाद जी उपाध्याय के साहित्य की याद दिलाती है, तुलनात्मक धर्माध्ययन करने वाले जिज्ञासुओं (के लिये उपयोगी) ...अन्य भाषाओं में अनुवाद व प्रकाशन होना चाहिए।

प्रकाशन, महाराणा प्रताप जयन्ती, बुधवार ज्येष्ठ शुक्ला 3 संवत् 2072 वि. (20 मई 2015) को किया गया है, उत्तम छपाई, आकर्षक बहुरंगी आवरण में पुस्तक प्रभावपूर्ण है, हमारा विश्वास है कि इस विषय पर, इस प्रकार की कोई पुस्तक आर्य साहित्य क्षेत्र में इतने अच्छे ढंग से प्रस्तुत व प्रकाशित नहीं हुई है। ईसाइयत से निवास, शिक्षा, प्रचार आदि कोई सम्बन्ध या अन्य किसी भी प्रकार से सम्पर्क में आने वाले व्यक्ति या परिवार तक यह पुस्तक अवश्य पहुंचाएं ताकि वे ईसाईयत के कुछ विषयों पर विचार कर अधिकार पूर्वक प्रामाणिक चर्चा कर सकें।

समीक्षक- संजय आर्य

चुनाव समाचार

आर्य समाज मयूर विहार फेस-1, दिल्ली-91
प्रधान - **श्री महेन्द्र कुमार चाठली**
मंत्री - **श्री अमीर चन्द रखेजा**
कोषाध्यक्ष-**श्री तुलसी दास नन्दवानी**

आर्य समाज अर्जुन नगर गुड़गांव (हरियाणा)
प्रधान - **मा. सोमनाथ आर्य**
मन्त्री - **श्री लक्ष्मण याहूजा**
कोषाध्यक्ष -**श्री ओम प्रकाश आहूजा**

साप्ताहिक आर्य सन्देश

6 जुलाई से 12 जुलाई, 2015

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2015-2017

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 9 जुलाई/10 जुलाई, 2015

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0 (सी0) 139/2015-2017

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथिः बुधवार 8 जुलाई, 2015

आर्यसमाज की मिसकॉल सेवा आरम्भ 9211990990

अपने मोबाइल से मिस कॉल दें और पाए निःशुल्क जानकारी

एस.एम.एस. से जानकारी चाहने वाले सज्जन इस नम्बर पर मिसकॉल करें

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आर्यसमाज के प्रचार हेतु मिसकॉल सेवा आरम्भ की गई। आप इस सेवा का लाभ उठाएं। यदि आप दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा अथवा आर्यसमाज से संबंधित किसी भी प्रकार की कोई जानकारी-सूचना प्राप्त करना चाहते हो तो 09211990990 पर मिसकॉल करें। आपके द्वारा कॉल करते ही कॉल कट जाएगी और आपको **धन्यवाद** संदेश प्राप्त होगा तथा आपका मो. नं. एस.एम.एस. सूची में अंकित हो जाएगा। **-महामंत्री**

प्रतिष्ठा में,

बच्चों के ज्ञान विकास के लिए अमूल्य भेंट

बाल (लघु) सत्यार्थ प्रकाश

मूल्य मात्र 10 रुपये प्रति
निःशुल्क वितरण हेतु 1000 प्रति
लेने पर 20% की विशेष छूट

-: प्राप्ति स्थान :-

वैदिक प्रकाशन
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा 15,
हनुमान रोड, नई दिल्ली- 110001
-श्री विजय आर्य
फोन : 011-23360150,
09540040339

आचार्यपद रजत जयन्ती समारोह

आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय नर्मदापुरम् होशंगाबाद में पूज्य आचार्य जगद्देव नैष्ठिक जी (स्वामी ऋतस्पति जी परिव्राजक) के आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय नर्मदापुरम् होशंगाबाद के आचार्यपद को सुशोभित करने के 25 वर्ष होने के अवसर पर दिनांक 27 से 29 नम्बर 2015 आचार्यपद रजत जयन्ती समारोह मनाया जा रहा है। अन्य जानकारी हेतु सम्पर्क करें। **-आचार्य योगेन्द्र याज्ञिक**

आवश्यकता है

आज समाज, कालकाजी, ए-ब्लॉक, डबल स्टोरी, कालका जी, नई दिल्ली- 110019 को एक सुयोग्य विद्वान पुरोहित व एक सेवक की आवश्यकता है। उचित वेतन के साथ-साथ, रहने के लिए स्थान, बिजली और पानी की भी आर्य समाज में व्यवस्था है। **-प्रधान, रमेश गाड़ी**

अन्तर्विद्यालयीय प्रतियोगिताओं का आयोजन

एकांकी प्रतियोगिता	17/07/2015 (शुक्रवार)	बिड़ला आर्य कन्या सी.से. स्कूल बिड़ला लाईस, दिल्ली-110007
मंत्र लेखन प्रतियोगिता	22/07/2015 (बुधवार)	महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल, शादीपुर खामपुर दिल्ली-110008
समूह गान प्रतियोगिता	28/07/2015 (मंगलवार)	महाशय धर्मपाल विद्या मंदिर सुभाष नगर, दिल्ली

सभी आर्य विद्यालयों के अधिकारियों से अनुरोध है कि अधिक से अधिक विद्यार्थियों को इन प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए प्रेरित करें।

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक धर्मपाल आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए हरि हर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1, टैलीफैक्स : 23360150, 23365959, E-mail : aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया।

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह